सम्यक् स्वानुभूतम्

श्री चक्षुर्विद्या-विधानम्

हिन्दी-सहितम्

अर्थात्

सर्वविधनेत्ररोगहराया नेत्रज्योतिषोऽभिवर्द्धिन्याः कृष्णयजुर्वेदीयायाः चाक्षुष्मतीविद्यापरनामधेयायाः चाक्षुषोपनिषदः सिद्धा प्राचीना प्रामाणिकी च अनुष्ठानपद्धतिः

सम्पादकः—

श्री--पं० विन्ध्येश्वरीप्रसाद--त्रिपाठी-वेदाचार्यः

देवरियास्थ-श्रीराधाकृष्ण संस्कृत कालेज-प्राध्यापकः
श्रीपरशुरामधाम--सोहनाग—समीपवर्त्ति-
तिलौली (पो० सलेमपुर जि० -
देवरिया) वास्तव्यः

तदिदम्

साङ्गवेद प्रचार समिति–देवरिया "धर्म प्रकाशन ग्रन्थमालाया" तृतीयं पुष्पम् ।

सम्वत् २००९ मूल्यम् ।)

प्रकाशकः

श्री पं० विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठी वेदाचार्य

अध्यक्ष—

हिन्दूधर्म सत्सङ्ग मन्दिर-तिलौलि

पो० सलेमपुर जि० देवरिया।

मुद्रकः—

श्री रामलाल शास्त्री

सुप्रभातम्—प्रेस, मीरघाट

काशी।

सम्यक् स्वानुभूतम्

श्री चक्षुर्विद्या-विधानम्

हिन्दी-सहितम्

अर्थात्

सर्वविधनेत्ररोगहरायाः नेत्रज्योतिषोऽभिवर्द्धिन्याः कृष्णयजुर्वेदीयायाः चाक्षुष्मतीविद्यापरनामधेयायाः चाक्षुषोपनिषदः सिद्धा प्राचीना प्रामाणिकी च अनुष्ठानपद्धतिः

सम्पादकः—

श्री--पं० विन्ध्येश्वरीप्रसाद--त्रिपाठी-वेदाचार्यः

देवरियास्थ-श्रीराधाकृष्ण संस्कृत-कालेज-प्राध्यापकः
श्रीपरशुरामधाम--सोहनाग—समीपवर्त्ति-
तिलौली (पो० सलेमपुर जि०-
देवरिया) वास्तव्यः

तदिदम्

साङ्गवेद प्रचार समिति—देवरिया "धर्म प्रकाशन ग्रन्थमालाया" तृतीयं पुष्पम्।

सम्वत् २००९ बसन्तपंचमी मूल्य ।)
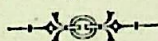
दो शब्द

इच्छा और अर्पण

नेत्र प्रकाश वर्द्धक सर्व नेत्र रोग निवारक लघुकाय पुस्तकाकार यह "चक्षुर्विद्याविधानम्" आप के समक्ष है। कृष्णयजुर्वेदीय चाक्षुषोपनिषद् का यह "विधान" कामरूप कामाक्षा में मुझे एक महात्मा से मिला था जिसका विवरण (श्लोक बद्ध हिन्दी सहित) इसके अन्त में दिया गया है । यह विधान आँख के कठिन से कठिन रोगों को दूर करने में रामबाण के समान सिद्ध और दक्ष है। मैंने अपनी आंख के भयङ्कर रोग में इसकी पूर्ण परीक्षा की है अत एव सम्यक् स्वानुभूत है। आंख के रोगों की दवाकर थके हारे मनमारे बैठे हताश रोगियों का एकमात्र अन्तिम सुलभ सिद्ध अमोघ अवलम्ब है । आंख का रोगी स्वयं इसका प्रयोग (अनुष्ठान) करे अथवा वेद विद्या सम्पन्न विज्ञ किसी ब्राह्मण से अपने लिये करावे, अवश्य ही लाभ होगा । इसके प्रयोग के सामने आंख का रोग टिक नहीं सकता । आँख में रोग न हो तब भी इसमें दिये "चाक्षुष्मती विद्या मन्त्र" पृष्ठ ८ का विनियोग कर प्रतिदिन एक वार पाठ करते रहने से भी आंख की ज्योतिः बढ़ेगी, रोग का भय दूर होगा । समय ५ मिनट से भी कम लगेगा। विशेष रोग रहने पर इस विधान का आदि से अन्त तक पूरा प्रयोग २१ इक्कीस दिनों का जो इसमें दिया गया है उसे करना चाहिये । २१ दिन तक प्रतिदिन इसमें १।। डेढ़ घण्टे से भी कम ही लगेगें। साधारण पूर्वोक्त पाठ करने वाले के भी कुल में कोई अन्धा नहीं होगा; पाठकर्त्ता की तो बात ही क्या ? अतः मैं अपूर्वलाभप्रद अव्यर्थ महौषधि रूप इस विधान को "साङ्ग-

वेद प्रचार समिति" देवरिया (उत्तर प्रदेश) की "धर्मप्रकाशन-ग्रन्थमाला" के तृतीय पुष्प रूप में अपने पूज्य विद्या गुरुजी (वेद वेदाङ्ग के महान् विद्वान् सर्वतन्त्र स्वतन्त्र वैदिकसार्वभौम आराध्यचरण वेदमूर्ति महायाज्ञिक श्री पं० भगवत्प्रसाद जी मिश्र आचार्य गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज बनारस) के वरद करों में (इसकी फल श्रुति में औरभी वर प्रसाद-ऋद्धि-वृद्धि लाभार्थ समर्पित कर, सर्वरोगी जन हितार्थ प्रकाशित करता हुआ धार्मिक जनों से इस मन्त्रप्रभावका अनुभव करने की कामना करता हूँ ।

धार्मिकजन वंशवद—
विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठी वेदाचार्य
मन्त्री—
साङ्गवेद प्रचार समिति
प्राध्यापक—
श्रीराधाकृष्ण संस्कृतकालेज, देवरिया
(उत्तर प्रदेश)

॥ श्रीः ॥

चक्षुर्विद्याविधानम्

अनुष्ठान-पद्धतिः

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

समर्थोऽधिकारी श्रद्धावान् साधकः प्रातः कृतसन्ध्यादि-नित्यक्रियः प्रक्षालितपाणिपादः पूर्वाभिमुखः कृतासन-परिग्रह उपर्युक्तेन मनुना शिखां बध्नीयात् । बद्धा चेद् भवेत्तदोपर्युक्तमन्त्रेण केवलं स्पृशेत् ।

समर्थ अधिकारी श्रद्धावान् साधक (जप पूजा पाठ कर्त्ता) प्रातः सन्ध्या आदि नित्य कृत्य करके हाथ पैर धो पूरबकी ओर मुँह कर आसन पर बैठ ऊपर लिखे (ॐ चिद्रूपिणि०) मन्त्र से शिखा बाँधे । पहले से बँधी रहे तो ऊपर के मन्त्रसे केवल उसे छू लेवे ।

२

शिखाबन्धनानन्तरं दाडिमलेखनीमादाय हरिद्रया कांस्यपट्टे कस्मिंश्चित् कांस्यपात्रे वाऽधोङ्कितं षोडशकोष्ठं सर्वतो द्वात्रिंशत्संख्यायोगात्मकमिमं यन्त्रं लिखेत्—

शिखाबन्धनान्तर अनार की कलम लेकर हरदी से काँसे

के पट्टेपर अथवा किसी भी काँसे के पात्रमें नीचे लिखे इस बत्तीसा यन्त्र को लिखे।

यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

३

लिखित-यन्त्रमध्ये ताम्रमयं चतुर्वर्तियुतं प्रज्वलन्तं घृत-दीपं संस्थाप्य तं गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य निम्नाङ्कितश्लोकेन प्रार्थयेत् ।

लिखित-यन्त्र के मध्यमें चार वत्तियों वाला ताम्रमय जलता हुआ घी का दीपक रखकर दीपकका चन्दन अक्षत पुष्प से पूजन कर नीचे के श्लोक से प्रार्थना करे।

प्रार्थना-श्लोकः

ॐ दीप त्वं ब्रह्मरूपोऽसि ह्यन्धकारनिवारक ।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णँस्तेजो विवर्द्धय ॥

४

निम्नाङ्कितेन मन्त्रेण पवित्रं धारयेत्

नीचे के मन्त्र से पवित्र धारण करे

मन्त्रः

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः
प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते
पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

५

त्रिभिरधस्तनैस्त्रिराचामेत्

नीचे के तीनों मन्त्रों से ३ वार आचमन करे

मन्त्राः

१—ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय ।
२—ॐ नमः करुणाकरायामृताय । ३ॐ नमः सूर्याय

६

आचमनोत्तरमधोऽङ्कितेन प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।

आचमन के बाद नीचे के मन्त्र से ३ प्राणायाम करे ।

मन्त्रः

ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः ।

७

निम्ननिर्दिष्टेन मन्त्रेण कुशादिना शरीरे जलं प्रसिच्य पवित्रो भवेत्।

निम्ननिर्दिष्ट मन्त्र से कुश आदि द्वारा शरीर पर जल सींच कर पवित्र होवे।

मन्त्रः

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

८

सपवित्रे हस्ते जलं तथा यथासम्भवं गन्धाक्षतपुष्पाणि ताम्बूलं दूर्वां पूगीफलं द्रव्यंचादाय सङ्कल्पं कुर्यात्।

पवित्र के सहित हाथ में जल तथा यथासम्भव चन्दन अक्षत पुष्प-पान-दूब सुपारी-द्रव्य लेकर संङ्कल्प करे।

सकल्पवाक्यम्

ॐ तत्सत्। ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद्भगवतो-महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो-द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रे-ताद्वापरान्ते अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगस्य प्रथम-चरणे ·········संवत्सरे ······· मासे···· पक्षे ···· तिथौ ···· दिने ····गोत्रः ···· शर्माहं [वर्माहं गुप्तोऽहं]

श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीतिद्वारा सर्वनेत्ररोगनिवृत्तिपूर्वक-नेत्रज्योतिर्विवृद्ध्यर्थमेतद्यन्त्रपूजन----पूर्वकम् आद्यन्तयोः "ॐ ह्रीं हंसः" इति मन्त्र-जपसहितं कृष्णयजुर्वेदीयचाक्षुषोपनिषदन्तर्गत -चाक्षुष्मती-विद्यामन्त्रजपकर्म करिष्ये।

संकल्पके सम्बन्ध में किसी संस्कृत के विद्वान् से आप
एक वार सहायता लीजिये और सङ्कल्प–वाक्य में
नीचे लिखी बातों का स्वयं भी
ध्यान रखिये।

जहाँ जहाँ केवल विन्दु रेखा है वहाँ पाठके दिन जो संवत्सर महीना-पक्ष-तिथि-दिन हो उसको यथास्थान जोड़ लीजिये और आप जिस वर्ण गोत्र-प्रवर-नाम के हैं उस का भी यथास्थान मिलान कर लीजिये। यदि आप स्वयं करने में असमर्थ हैं तो किसी ब्राह्मण (योग्य) का वरण कर उससे करावें। उस स्थितिमें पाठ कर्त्ता ब्राह्मण—शर्माहं के पहले निम्नलिखित वाक्य जोड़ें [अमुकगोत्रेण अमुकनाम्ना मनसोद्दिष्टेन यजमानेन वृतः तस्य] के आगे ऊपर लिखित (सर्वरोग नि०) इत्यादि का उच्चारण करें।

पाराशरस्मृति में लिखा है कि ब्राह्मण द्वारा कराने पर भी फल पूरा ही मिलता है।

उपवासो व्रतं चैव स्नानं तीर्थं जपस्तपः।
विप्रैः सम्पादितं यस्य सम्पन्नं तस्य तद् भवेत् ५८

पाराशरस्मृतिः अ० ६

९

तत आदौ पञ्चोपचारैः (गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्यैः) निम्नाङ्कितक्रमेण वाक्यान्युच्चार्योच्चार्य यन्त्रं पूजयेत् ।

संकल्प के बाद पहले पञ्चोपचार अर्थात् चन्दन-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य द्वारा निम्नलिखित क्रम से वाक्योंका उच्चारण कर यन्त्र का पूजन करे ।

क्रमः

१-ॐ यन्त्राय नमः चन्दनं समर्पयामि २-पुष्पाणि समर्पयामि ३-धूपमाघ्रापयामि ४-दीपं दर्शयामि ५-नैवेद्यं निवेदयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि, नमस्करोमि ।

१०

एवं यन्त्रं सम्पूज्य हरिद्रामालामग्रिमेण मन्त्रेण प्रणमेत् चन्दनादिभिः पूजयेच्च ।

इस प्रकार यन्त्रका पूजन कर हरदीकी मालाका आगेके मन्त्रसे प्रणाम करे और उसका चन्दन आदिसे पूजन करे ।

मन्त्रः

ॐ मां माले माहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

ॐ सिद्धयै नमः

११

पीतजपमालिकामध्यस्थां पीतवस्त्रान्तरितां वा तां हरिद्रामालां निम्नाङ्कितेन मन्त्रेण दक्षिणहस्ते आदद्यात् (जपार्थम्)

पीत जपमाली में रख कर अथवा पीतवस्त्र से ढंक कर उस हरदी की माला को नीचे के मन्त्र से दाहिने हाथ में जप के लिये लेवे ।

मन्त्रः

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले तु सततं प्रसीद मम सिद्धये ॥

१२

एवं हरिद्रामालामादायाधस्तनमन्त्रस्य ६ षण्माला-मितं जपं कुर्यात् ।

इस प्रकार हरदी की माला को लेकर उससे नीचे के मन्त्र का ६ माला जप करे ।

मन्त्रः

॥ ॐ ह्रीं हंसः ॥

१३

जपं विधाय हस्ते जलमादाय ऋष्यादिनामयुतं निम्नाङ्कितं-विनियोगवाक्यमुच्चार्य जलं भूमौ प्रक्षिप्य द्वादशकृत्वो-वक्ष्यमाणं चाक्षुष्मतीविद्यामन्त्रं जपेत् (पठेत्)

जप करके हाथमें जल लेकर ऋषि आदिके नामसे युक्त नीचे के विनियोग वाक्य का उच्चारण कर जल को भूमि पर छोड़ बारह वार आगे कहे चाक्षुष्मती विद्यामन्त्र का जप करें अर्थात् (पाठकरें)

विनियोगवाक्यम्

अस्याः, चाक्षुष्मतीविद्यायाः, अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री-छन्दः सूर्यो देवता सर्वविधनेत्ररोगनिवृत्तिपूर्वकं नेत्रज्योतिषोऽभि-वृद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

अथ श्री चाक्षुष्मती-विद्या-मन्त्रः

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव । मां पाहि पाहि । त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय । मम जातरूपं-तेजो दर्शय दर्शय । यथाहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय ।

हिन्दी-अर्थ

हे ॐ शब्द (महामन्त्र) के वाच्य अर्थ परब्रह्म परमेश्वर रूप आँख के अधिष्ठातृ-देव भगवान् सूर्यनारायण ! यह मेरी आँख है, आँख ही सर्वतोऽधिक प्रिय अङ्ग है अतः आप इस मेरी आँख में तेज (विशेष प्रकाश) रूप से स्थिर हो जाँय । मेरी रक्षा करें रक्षा करें । अति शीघ्र आँख के समस्त रोगों का शमन करें शमन करें । मुझे सुवर्ण समान तेज दिखला दें दिखला दें । जिस प्रकार मैं अन्धा न हो जाऊँ वैसा ही करें । कल्याण करें

कल्याणं कुरु कुरु । यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः-प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय । ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय । ॐ नमः करुणाकरायामृताय । ॐ नमः सूर्याय ॐ । नमोभगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः । खेचराय नमः । महते नमः ।

रजसे नमः । तमसे नमः । असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा अमृतं गमय । उष्णो-भगवाञ्छुचिरूपः । हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः । य इमां-

---

कल्याण करें । जो मेरे पूर्वजन्म के उपार्जित आँख के विरोधी पाप हैं उन सबको निर्मूल कर दें निर्मूल करदें । ॐ शब्द वाच्य सच्चिदानन्द स्वरूप आँख की ज्योति को देने वाले दिव्य भगवान् जगत्प्रकाशक सूर्यदेव को नमस्कार है । ॐ शब्दार्थ करुणा के खान अमृत स्वरूप को नमस्कार है । ॐ शब्दार्थ सूर्यको नमस्कार है । आँखके तेज रूप सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान् सूर्य को नमस्कार है । आकाशचारी को नमस्कार । महान् को नमस्कार है । क्रिया शक्ति देने वाले रजो गुणके स्वरूप भगवान् सूर्यको नमस्कार है । अन्धकार को आत्मसात् करने वाले तमोगुण रूप भगवान् सूर्य देव को नमस्कार है । भगवान् मुझे असत्से हटा कर सत्की ओर ले चलिये । अन्धकारसे हटा कर प्रकाश की ओर ले चलिये । मृत्यु से दूर कर अमृतकी ओर ले चलिये । दीप्त स्वतेजस्तप्त (उष्ण) भगवान् सूर्य पवित्रता के स्वरूप हैं । हंस पद वाच्य भगवान् पवित्र करने की शक्तिमें वेजोड़ हैं उनकी बराबरी

चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति । अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ॥१॥

नहीं हो सकती, जो ब्राह्मण इस चाक्षुष्मती विद्याका नित्य पाठ करता है (अपने लिये) तो उसके कुल में (और-दूसरे के लिये जिस केलिए करता हैं उसके भी) कुल में कोई अन्धा नहीं होता है। जो ब्राह्मण नित्य पाठ करता है उसका अथवा जिसके लिये ब्राह्मण नित्य पाठ करता है उसको आँख के कोई भी रोग नहीं होते हैं। इस विद्या को आठ ब्राह्मणों को देने पर इस विद्या की सिद्धि होती है ॥ १ ॥

पराशर स्मृति अ० ६ श्लोक ५८ में लिखा है कि :—

उपवासो व्रतं चैव स्नानं तीर्थं जपस्तपः ।

विप्रैः सम्पादितं यस्य सम्पन्नं तस्य तद् भवेत् ॥

अर्थात्

उपवास व्रत स्नान तीर्थ जप (पाठ) तप जिसके लिये ब्राह्मण करते हैं वे सब उसके (कराने वाले को) पूर्ण फल देने वाले होते हैं। यह महर्षि पराशर का आशीर्वाद धर्मशास्त्र का विधान है।

तथा

इस विद्या के मूल विधान भाग में भी आया है उसे भी आप देखें। इस पुस्तक के पृष्ठ १३ में भगवान् शंकर का कहा वाक्य है कि इस विद्याका पाठ करने में असमर्थ आदमी यदि नेत्र रोग को दूर करने के लिये अथवा ज्योति बढ़ाने के लिये या किसी भी

१४

एतावानेव मन्त्रः। पूर्वोक्तं द्वादशकृत्वोऽस्य जपं (पाठं) कृत्वा पुनरन्ते पूर्ववत् ("ॐ ह्रीं हंसः" इत्यस्य) ५ पञ्च-मालामितं जपं कुर्यात् ।

इतना ही (उपर्युक्त) मन्त्र है। पहले कहे गये अनुसार बारह बार इस का पाठ (जप) कर के पुनः अन्त में पूर्ववत् ("ॐ ह्रीं हंसः" इस मन्त्र का) ५ पाँच माला जप करें ।

१५

जपान्ते द्विराचम्य मालां सम्प्रार्थ्य यथास्थानं स्थापयेत्।

जपके अन्तमें दो वार आचमन कर मालाकी प्रार्थना कर यथास्थान रख दे।

माला प्रार्थना

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥

१६

रक्तचन्दनपुष्पादिसहितं जलमादाय मन्त्रेण भगवते सूर्यायार्घं निवेद्य प्रणमेत्, मनसि निश्चयं च कुर्याद् यदवश्यं मे चक्षूरोगो नंक्ष्यति, नश्यति, अपि नेत्रज्योतिश्च वर्द्धते ।

नेत्र सम्बन्धी कमी के लिये जो ब्राह्मण वेद विद्या सम्पन्न हों उन का वरण कर उन के द्वारा पाठ करावे तो भी अवश्य ही, अवश्य ही कराने वाला मनुष्य सम्पूर्ण फल पाता है।
(यह वहाँ के संस्कृत वाक्य का अनुवाद है-स्थल देखें)

माला रख देनेके बाद लाल चन्दन पुष्प आदिके सहित जल लेकर मन्त्र से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ देकर प्रणाम करे और मनमें यह निश्चय करे कि अवश्य ही मेरा नेत्ररोग नष्ट होगा, नष्ट हो भी रहा है और नेत्रकी ज्योति बढ़ रही है।

अर्घ–मन्त्रः

ॐ विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं तपन्तम् ।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥
ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा ।
एषोऽर्घः श्रीसूर्याय सर्वसाक्षिणे नमः

१७

इत्थमेकविंशत्या दिनैरेकमनुष्ठानं पूर्णं भवति

इस प्रकार २१ इक्कीस दिनमें एक अनुष्ठान पूर्ण होता है।

१८

अनुष्ठातास्य सर्वेभ्यो नेत्ररोगेभ्यो मुक्तो भवति मुक्तो भवति ।

इसका अनुष्ठान करने वाला सम्पूर्ण नेत्र रोगोंसे छूट जाता है। छूट जाता है ।

१९

नेत्ररोगरहितोऽपि केवलं विनियोगमात्रं कृत्वा प्रतिदिनं नियमतः चाक्षुष्मतीविद्यामन्त्रं पठन् नेत्ररोगभयान्मुच्यते नेत्रज्योतिषि च वृद्धिं लभते लभते । सत्यं सत्यं न संशयः ।

नेत्ररोग रहित भी व्यक्ति केवल विनियोग मात्र (ऋष्यादि के स्मरण सहित) कर प्रतिदिन नियमसे चाक्षुष्मती विद्यामन्त्र

(पूर्वोक्त) का पाठ करता हुआ नेत्ररोग के भयसे मुक्त हो जाता है और नेत्रकी ज्योतिमें वृद्धि पाता है पाता है सत्य सत्य संशय नहीं है।

२०

अस्य अनुष्ठानं चिकीर्षुः स्वयमसमर्थः समर्थो वा ब्राह्मणं वेदविद्यासम्पन्नं विज्ञं सदाचारिणं वृत्वा तद्द्वारानुष्ठाय सम्पूर्णफलभाग् भवति भवति चैतदाह भगवान् पिनाकपाणिः सदा–शिवो मृत्युञ्जयः उमामित्युमामिति।

इस अनुष्ठान को करने की इच्छा वाला करने में असमर्थ हो अथवा समर्थ भी हो यदि चाहे तो वेदविद्या सम्पन्न विद्वान् सदाचारी ब्राह्मण का वरण कर उनके द्वारा इसका अनुष्ठान करा कर सम्पूर्ण फल का भागी होता है। यह भगवान् पिनाकपाणि सदाशिव मृत्युञ्जय ने उमासे कहा है। उमासे कहा है।

२१

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विद्यामिमां दत्वास्यां विद्यायां सिद्धो भवति तदाञ्जसैवावश्यं फलं विन्दते विन्दते विन्दते नेयमन्यथा नेयमन्यथा नेयमन्यथेत्योम् शम्।

आठ ब्राह्मणोंको इस विद्याको देकर इस विद्यामें मनुष्य सिद्ध होता है तब शीघ्र ही अवश्य फल प्राप्त करता है प्राप्त करता है प्राप्त करता है। यह वाणी अन्यथा नहीं है यह वाणी अन्यथा नहीं है यह विधान सम्पूर्ण हुआ। ॐ कल्याण हो।

—०—:❀:—०—

श्री कामरूपकामाक्षानाम्ना सुप्रसिद्धे श्रीकामाक्षीदेवीधामनि
सिद्धतपोमूर्तितान्त्रिकमहात्मनो वरप्रसादात्–

श्रीपरशुरामधाम–सोहनाग–समीपवर्त्ति–तिलौली (पो० सलेमपुर-
जि० देवरिया) वास्तव्येन देवरियास्थ-श्रीराधाकृष्ण
संस्कृत–कालेज–प्राध्यापकेन—

श्री पं० विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठि--वेदाचार्येण

लब्धम्--सम्पादितम्

तत्कृतयैव हिन्दी–टीकयोपेतम्

चक्षुर्विद्याविधानम् सम्पूर्णम् ।

ॐ शम् तत्सत् ब्रह्मार्पणम् ।

संक्षिप्तम्
विधान–प्राप्ति–विवरणम् ।

कामरूपे च कामाख्या देव्या धाम्नि महात्मनः ।
प्रसादात्तालपत्रस्थं प्राप्तं चेदं विधानकम् ॥ १ ॥

कामरूप (आसाम देशके) कामाक्षा धाममें एक महात्मा के अनुग्रहसे ताड़पत्र पर लिखा यह विधान प्राप्त हुआ।

भक्त्या सुप्रणिपातेन दूराद्गतवतो मम ।
ददत्तुष्टस्तपोराशिर्वाक्यं मां चेदमब्रवीत् ॥ २ ॥

मैं दूरदेशसे गया था मेरी भक्ति तथा नम्रतासे सन्तुष्ट हो वे तपस्वी इस विधानको देते हुये मुझसे कहे कि ॥ २ ॥

ब्रह्मास्त्रं नेत्ररोगाणां विनाशाय महौषधम् ।
सुगुप्तं संयतं स्थाप्यं दातुमिच्छा यदा शृणु ॥ ३ ॥

नेत्रके रोगोंको नष्ट करनेके लिये यह विधान ब्रह्मास्त्र है। महान् औषध है अच्छी तरह छिपाकर इसे रखना, देना हो तो ॥३॥

श्रद्धा–स्नेह–दया–धर्मैः संयुक्ताय सुशीलिने ।
देयं हेयं न मे वाक्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ ४ ॥

श्रद्धा-स्नेह-दया-धर्म से युक्त अच्छे शीलवान् को देना, मेरी इस बात की उपेक्षा न करना, जिस किसी को न देना ॥ ४ ॥

पूर्वं हृष्टः पुनः खिन्नः श्रुत्वेदं भाषितं तदा ।
ध्यात्वा देवीं महामायां प्रत्यवोचं शनैर्वचः ॥५॥

मैं पहले प्रसन्न था किन्तु यह सुन कर उदास हो गया और महामाया देवीका ध्यानकर धीरे से बोला ॥ ५ ॥

मुद्रापयितुमिच्छामि बहूनां हितकृन्मनाः ।
इमां गुरो।प्रदायाज्ञां स्वीकरोत्वाग्रहं मम ॥ ६ ॥

गुरुजी ! बहुतोंकी हित कामनासे मैं इसे छपाना चाहता हूँ अतः इस आज्ञा को देकर मेरे आग्रह को स्वीकार करें ॥ ६ ॥

भूयो भूयो दृढं दृष्ट्वा चाग्रहे मां कृपावतः ।
"अच्छा देवी कृपा" प्रोच्य वाञ्छसि त्वं तथा कुरु ॥७॥

बार बार मुझे आग्रहमें दृढ़ देखकर दयाकरके "अच्छा-देवी की कृपा" यह जोर से बोल कर (बादको प्रेमसे) उन्होंने कहा-जैसा चाहते हो वैसा ही करो ॥ ७ ॥

ततस्तं सम्यगापृच्छ्य मन्त्रयित्वा समागतः ।
सौकर्यार्थमहं हिन्द्या सर्वेषां टीकया युतम् ॥ ८ ॥

यह आदेश पाने पर मैं उनसे अच्छी प्रकार पूछकर सम्मति लेकर यहाँ चला आया और सबकी सुविधाके लिये हिन्दी टीका युक्त कर ॥ ८ ॥

अनुभवं दृढं कृत्वा स्वकीये नेत्ररोगके ।
प्रकाशं नीतवानेतन्नेत्रज्योतिर्विवर्द्धकम् ॥ ९ ॥

अपनी आँख के रोग में पूरा अनुभव कर नेत्रकी ज्योति बढ़ाने वाले इस विधानको नेत्ररोगसे पीड़ित रोगियोंके उपकारके लिये छपवाया है ॥ ९ ॥

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठी—वेदाचार्यः

अंक हो गये हैं और जम्मू कश्मीरके खिलाफ भी उसे मैच खेलना है। पंजाबने अपने लीग मैच समाप्त करते हुए ८१ अंक हासिल किये है, जबकि एक प्रमुख दावेदार हरियाणा (८१ अंक) नाक आउट दौरमें पहुंच गया है।

संक्षिप्त स्कोर-दिल्ली आठ विकेटपर ३५ रन और एक विकेटपर ६८ रन। पंजाब ३५० और २५२ रन।

संक्षिप्त स्कर-यूथ (मुकुल साहा ३२, अमरननाथ २/२) (धीरज मिश्र ५/ ११५ (दिग्वि नत्थू ३/२१) ३/२ अभय २

आजका मैच डी.पी. ब्वायज आजाद हिंद।

पश्चिम क्षेत्र सेमीफ

का जड़ा और फिर स्क्वायर कटसे चौका जड़कर अपना पचासा पूरा किया। किन्तु अगली ही गेंदपर वह मिड आफमें पटेल द्वारा लपक लिया गया। उस समय पूर्वका स्कोर १ था। राजिन्दर सिंहने ४४ रनोंका योगदान किया खेल समाप्तिके समय सबा करीम एवं सौरभ गांगुली विकेटपर थे।

शास्त्रीने भी मैचकी नीरस स्थितिको देखते यदाकदा गेंदबाजी करनेवाले सचिन तेंदुलकर, विनोद काम्बली एवं मुकुन्द

परमारको गेंदबाज विकेट झटके। क कपिल देव, ग्लैड गावसकरके गेंदब दर्शकोंको आनन्दित किया।

इससे पूर्व काम्बलीने दूसरी पालीमें अपने कलके स्कोर ६२ को आगे बढ़ाकर ८७ तक पहुंचाया शरदेन्दुकी गेंदपर वह स्लिपमें गांगुली द्वारा लपका गया। उसने १२३ गेंदोका सामना कर नौ चौके जड़े।

प्रतियोगिताके अगले

एकता स्पोर्टिंगके ब्लु स्टार क्लबकी पाली गयी।

संक्षिप्त स्कोर-एक ओवरोंमें १४५ (अ २६, अवधेश २४, संजय २/३२, राजे १५ ओवरोंमें ८१ (तथा अजय ३ विकेट)

वाराणसीके ४ प्रशिक्षुओं को ब्लैक बेल्ट
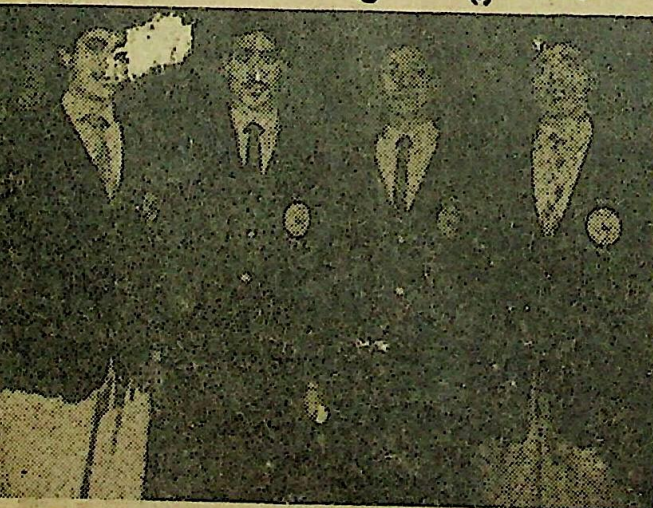
वाराणसी, १५ जनवरी। नगरके तीन टे प्रशिक्षुओं नरेश बाम्भने, आर. जी, अरुणेशकुमार सिंह तथा किशन ... को ... मंचके ...

एम.ए. अली (छडान) ने 'ब्लैक बेल्ट' से सम्मानित किया।

श्री अली विश्व कराटे संघके ... भी हैं।

पंकजने स्टा

अंतिम ८ में

वाराणसी, १५ राजहंसकी सधी बलपर स्टार सारनाथमें प्रा क्रिकेट प्रतियो विकेटोंसे हरा गयी।

संक्षिप्त स्कोर- ओवरोंमें ४१ (श राजहंस ६/१७, न लेट ७.२ ओवरोंमें खोये-४३ (रविप्रका राजहंस १४ अजेय)।

आजके मैच-गेलार्ड तथा न्यू भारती ...